आर्थिक समीक्षा 2016-17

पुनः अनुदित

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आर्थिक कार्य विभाग
आर्थिक प्रभाग
जुलाई, 2017

विषय सूची

अध्याय सं॰	अध्याय का नाम		पृष्ठ सं॰
	आभार		v
	प्राक्कथन		vii
	शब्द संक्षेप कोष		ix
	भारत : आठ रोचक तथ्य		xi
	भाग-I : परिप्रेक्ष्य		
1	**आर्थिक परिदृश्य और नीतिगत चुनौतियां**		
	I.	विषय प्रवेश	1
	II.	वैश्विक परिप्रेक्ष्य	7
	III.	वर्ष 2016-17 के घटनाक्रम की समीक्षा	9
	IV.	वर्ष 2016-17 की संभावनाएं	13
	V.	वर्ष 2017-18 की आशाएं	20
	VI.	अन्य मुद्दे	23
2.	**विलक्षण विचार-भेद ग्रस्त भारत के लिए एक आर्थिक दृष्टिबोध**		
	I.	विषय प्रवेश	38
	II.	अभी जिस राह पर चलना है	42
	III.	संभव व्याख्या	47
	IV.	निष्कर्ष	51
	भाग II : सन्निकट		
3.	**विमुद्रीकरण : स्तुति करें या भर्त्सना?**		
	I.	विषय प्रवेश	53
	II.	पृष्ठभूमि के तथ्य	55
	III.	विश्लेषण विधि	59
	IV.	हितलाभ	59
	V.	संभावित दीर्घकालिक हितलाभ के प्रारंभिक साक्ष्य	62
	VI.	अल्पकालीन प्रभाव	65
	VII.	जीडीपी पर प्रभाव	67
	VIII.	सरकार के पक्ष में पुनः वितरण	74
	IX.	सफलता के कुछ चिन्ह	75
	X.	दीर्घकालिक लाभों को अधिकतम एवं अल्पकालिक लागतों को न्यूनतम करना	76
4.	**दोहरी तुलन पत्र समस्या का नासूर**		
	I.	विषय प्रवेश	82
	II.	क्या यह युक्ति धारणीय है?	89

III. क्या करना आवश्यक है? 94
IV. निष्कर्ष 98

5. **राजकोषीय रूपरेखा : विश्व बदल रहा है! क्या भारत को भी बदलना चाहिए?**
I. विषय प्रवेश 105
II. भारत और विश्व : प्रवाह 106
III. भारत और विश्व : स्टॉक 108
IV. निष्कर्ष 111

6. **राजकोषीय नियम : राज्यों से सीख**
I. विषय प्रवेश 113
II. राजकोषीय उत्तरदायित्व विधेयनों का सारांश 115
III. मूल्यांकन की कार्यविधि 115
IV. घाटे पर प्रभाव 117
V. बजट से इतर व्यय 119
VI. बजट प्रक्रिया 120
VII. मूल्यांकन 121
VIII. भविष्य में राजकोषीय नियम रचना के लिए सीखें 121

7. **परिधान और पदत्राण (जूते) : क्या भारत निम्न कौशल विनिर्माण पर पुनः अधिकार कर सकता है?**
I. विषय प्रवेश 128
II. परिधान और पदत्राण ही क्यों? 128
III. चुनौतियां 132
IV. नीतिगत प्रतिक्रिया और निष्कर्ष 136

8. **आर्थिक घटनाक्रम की समीक्षा**
I. विषय प्रवेश 140
II. राजकोषीय घटनाक्रम 142
III. कीमतें 144
IV. मौद्रिक प्रबंधन और वित्तीय मध्यस्थी 146
V. भारत का वस्तु व्यापार 150
VI. भुगतान शेष 152
VII. बाह्य ऋण 153
VIII. वर्ष 2017-18 में अर्थव्यवस्था की संभावनाएं 154
IX. कृषि और खाद्य प्रबंधन 155
X. औद्योगिक, निगम और संरचना क्षेत्रक 157
XI. सेवाओं का क्षेत्र 158
XII. सामाजिक उपरि संरचना, रोजगार और मानवीय विकास 159
XIII. जलवायु (मौसम चक्र) परिवर्तन 164

9. **सार्वलौकिक आधारिक आय : महात्मा से चिन्तन मनन**
I. विषय प्रवेश 173

II. UBI : सैद्धांतिक और दार्शनिक आधार 173
III. UBI के विरूद्ध संकल्पनागत तर्क 174
IV. एक UBI इन समस्याओं पर किस प्रकार पार पा सकता है? 182
V. जोखिम के विरूद्ध बीमा और मनोवैज्ञानिक लाभ 183
VI. बेहतर वित्तीय समाहन 183
VII. प्रलोभक पदार्थ : क्या UBI से दुराचार को प्रोत्साहन मिलेगा? 187
VIII. नैतिक द्वन्द्व : क्या UBI से श्रम की आपूर्ति कम होगी? 187
IX. आगे का रास्ता 187
X. निष्कर्ष 195

भाग III : चिरंतन

10. आय, स्वास्थ्य और प्रसवन दर : अभिसृति की पहेलियां
I. विषय प्रवेश 213
II. निष्कर्ष-I.: आय/उपभोग का (भारत में) परिव्यापन 216
III. निष्कर्ष-II : भारत में स्वास्थ्य आयाम में अभिसृति हुई है किन्तु शेष विश्व के मानकों की तुलना में यहां अभी और सुधार की गुंजाइश है। 219
IV. निष्कर्ष-IV प्रसवनता : असाधारण निष्पादन 222
V. निष्कर्ष 223

11. भारत एक है : वस्तुओं के लिए भी और संविधान की दृष्टि से भी
भाग 1 : एक भारत : वस्तुओं का आंतरिक व्यापार
I. क्या भारत अन्य देशों की अपेक्षा अधिक व्यापार करता है? 233
II. अन्तर्राज्यीय व्यापार और विनिर्माण के बीच संबंध 235
III. अंतर्राज्यीय व्यापार के स्वरूप : विभिन्न फर्मों के बीच व्यापार 235
IV. अन्तर्राज्यीय व्यापार के स्वरूप : अन्त:फर्म व्यापार 237
V. क्या भारतीय अन्तर्राज्यीय व्यापार असमान्य है? एक गुरूत्वाकर्षण प्रतिमान से प्राप्त औपचारिक प्रमाण 239
VI. पहेली की व्याख्या : भारत इतना अधिक व्यापार क्यों करता है? 240
VII. निष्कर्ष 242
भाग 2 : एक भारत : कानून के समक्ष
I. विषय प्रवेश 243
II. भारतीय संवैधानिक प्रावधान और न्यायशास्त्र 243
III. अन्य देशों में वैधानिक प्रावधान 245
IV. तुल्य विश्व व्यापार संगठन कानून 247
V. निष्कर्ष 248

12. गतिशील एवं मंथनशील भारत : नए साक्ष्य
I. विषय प्रवेश : मुख्य परिणाम 264
II. आधारिक जनगणना आंकड़े : प्रवसन के स्तर और संवृद्धि 266
III. प्रवसन का पुन: आंकलन : दो समय अवधियां, दो आंकड़ा स्रोत और दो नई विधयां 267
IV. निष्कर्ष 277

13. **'दो अलग-अलग भारत'' : राज्यों के विकास की दो विश्लेषणात्मक वर्णन पद्धतियां (पुनः वितरणात्मक और प्राकृतिक संसाधन आधारित)**

I.	विषय प्रवेश	285
II.	पुन:वितरणीय संसाधनों का प्रभाव	286
III.	पुन:वितरणात्मक संसाधन अंतरण : भारतीय राज्यों से साक्ष्य	287
IV.	प्राकृतिक संसाधनों का प्रभाव	290
V.	प्राकृतिक संसाधन और भारतीय राज्यों से प्राप्त साक्ष्य	292
VI.	निष्कर्ष	295

14. **स्पर्धी संघवाद से स्पर्धी अनुसंघवाद नगर : ऊर्जाकेन्द्रों के रूप में**

I.	विषय प्रवेश	300
II.	पृष्ठभूमी	301
III.	प्रमुख चुनौतियां	302
IV.	देश भर से प्राप्त सीखें	306
V.	संसाधन जुटाना	309
VI.	निष्कर्ष	314

टिप्पणियां

आर्थिक समीक्षा में निम्नलिखित सांख्यिकी/इकाइयों का प्रयोग किया गया है:

बी सी एम	बिलियन क्यूबिक मीटर	कि. ग्रा.	किलोग्राम
बी यू	बिलियन यूनिट	हे.	हेक्टेयर
एम टी	मिलियन टन	बी बी एल	बिलियन बैरल प्रति लीटर
लाख	1,00,000	बिलियन	1,000 मिलियन/100 करोड़
मिलियन	10 लाख	ट्रिलियन	1,000 बिलियन/100,000 करोड़
करोड़	10 मिलियन		

आभार

आर्थिक समीक्षा अनेक स्तरों पर सांझे प्रयासों का परिणाम है। समीक्षा में आर्थिक प्रभाग और मुख्य आर्थिक सलाहकार के कार्यालय से इन सभी के योगदान प्राप्त हुए हैं : अर्चना माथुर, एच.ए.सी. प्रसाद, ए.एस.सचदेव, रोहित के.परमार, जी.एस.नेगी, राजश्री रॉय, एंथनी साइरिएक, आर.सतीश, पी.के.अब्दुल करीम, आशुतोष रा रविकर, निखिला मेनन, श्वेता मृत्युंजय झा, आकांक्षा अरोड़ा, रबी रंजन, दीपक कुमार दास, विजय कुमार, एम. राहुल, अभिषेक आनंद, गौरव झा, कनिका वाधवान, सोनल रमेश, विजय कुमार मान, रियाज अहमद खान, शोबेंदर अक्काय, सलाम श्यामशंदर सिंह, मोहम्मद आफताब आलम, प्रद्युत कुमार पाइन, नरेंद्र जेना, संजय कुमार दास, परवीन जैन, सुभाष चंद, राजेश शर्मा, अमित कुमार केसरवानी, मृत्युंजय कुमार, गायत्री गणेश, तेजस्वी वेलायुद्ध, रंजीत घोष, जोश फेलमैन, जस्टिन सैन्डीफर, देव पटेल, रोहित लांबा, सिद्धार्थ ईपेन जॉर्ज, सुतिर्था रॉय, सौमित्रो चटर्जी, सिड रविनुतला, अमृत अमीरपु, एम आर शरण, पार्थ खीरे, बोबन पॉल, अनन्या कोटा, नवनीराज शर्मा, कपिल पाटीदार और सैयद जुबैर हुसैन नकबी।

समीक्षा माननीय वित्तमंत्री, श्री अरूण जेटली की टिप्पणियों और अंतर्दृष्टियों से बहुत लाभान्वित हुई है। संभवत: पहली बार देश के किसी वित्त मंत्री ने स्वयं समीक्षा के एक भाग की रचना का योगदान भी दिया है। समीक्षा अन्य केन्द्रीय मंत्रियों की टिप्पणियों और सुझावों के लिए भी अपना आभार व्यक्त करती हैं। इनमें सम्मिलित हैं : श्री एम. वैंकेइया नायडू, श्री सुरेश प्रभु, श्री रामविलास पासवान, श्री अनंत कुमार, श्री जगत प्रकार नड्डा, श्री राधा मोहन सिंह, श्रीमती स्मृति जुबीन ईरानी, श्री धर्मेन्द्र प्रधान, श्री पीयूष गोयल, श्रीमती निर्मला सीतारमन, श्री जयंत सिन्हा और वित्त राज्य मंत्रीगण, श्री संतोष कुमार गंगवार और श्री अर्जुन राम मेघवाल।

समीक्षा अन्यान्य अधिकारियों की टिप्पणियों और उनके सुझावों/आदानों से भी बहुत समृद्ध हुई है। इनमें उल्लेखनीय नाम ये हैं : अरविन्द पानागडिया, नृपेन्द्र मिश्रा, जी के मिश्रा, रघुराम जी राजन, उर्जित पटेल, अशोक लवासा, शक्तिकांत दास, हसमुख अधिया, अंजुली चिब दुग्गल, नीरज कुमार गुप्ता, एस जयशंकर, अमिताभ कांत, टी सी अनंत, विजय केलकर, वाई वी रेड्डी, रमेश चंद, ए पी होटा, रीता टिओटिया, कपिल देव त्रिपाठी, रश्मी वर्मा, एम. सत्यावती, सीमांदाश, संगीता वर्मा, अमरजीत सिन्हा, सुशील चंद्र, मोहन जोसेफ, अजय त्यागी, दिनेश शर्मा, नजीब शाह, सुशील चंद्र, रानी सिंह नायर, नागेश सिंह, एम आर आनंद, टी वी सोमनाथन, तरुण बजाज, ब्रजेंद्र नवनीत, अनुराग जैन, सौरभ गर्ग, प्रशांत गोयल, आनंद झा, डॉ कुमार वी प्रताप, बी वी एल नारायण, अरविंद मेहता, अरबिंद मोदी, आशुतोष जिंदल, आलोक शुक्ला, अमिताभ कुमार, हनीश यादव, नवीन विद्यार्थी, सत्य श्रीनिवास, माइकल पात्रा, दीपक मोहंती, बिपीन मेनन, नंद समीर दवे, अविनीश कपूर, वीरेंद्र सिंह, अनुराग सहगल, दीपशिखा अरोड़ा, राजन कुमार, अक्षय जोशी, दीपक कुमार, डीपीएस नेगी, राम रेड्डी, कंचन द्युति मैती, आर.बी. वर्मा, सास्वत रथ, श्वेता तोमर, वरुण दत्त, निशा थॉम्पसन, थेजेश जी एन, जोर्ज कोरासा, शीना छाबड़ा, ओवेन के. स्मिथ, श्रीनिवास कोडली, अविनाश सेलेस्टीन, अमन गुप्ता, पवन बक्षी, मनोज अलगराजन, रेणाना झाबवाला, सरथ दावला, नवीन थॉमस, राजेश बंसल, अर्ध्य सेनगुप्ता, राहुल बसु, के पी कृष्णन, निर्मल कुमार, प्रशांत कुमार, लविश भंडारी, तिलोत्तमा घोष, भारतेन्दु पांडे, तिशा सहदेव, सेरेन वैद, रंजीत सिन्हा, कल्पना भारद्वाज, प्रवीण कुमार, प्रकाश कुमार, संजय सिन्हा, योगेश, टॉड मॉस, कैरोलीन फ्रींड, सामंत दास, शिशिर बैजल, सुमित शेखर और सावित्री देवी, जीएसटीएन टीम, डाटा मीट टीम और पूरी टीम वित्त पुस्तकालय में और अभिजीत वी बनर्जी, दानी रोद्रीक, देवेश कपूर, प्रताप सहित कई बाहरी सहयोगी प्रताप भानू मेहता, पार्थ मुखोपाध्याय, नंदन नीलेकणी, सुरजीत भल्ला, हिमांशु, चिन्मय तम्बे, इरुदया राजन, देवेश रॉय, हरीश दामोदरन, गाय स्टैंडिंग, एस सुनीता, मनोज अलगराजन, संजय कुमार, अशोक मोदी, शेखर अय्यर, राममनोहर रेड्डी, सुदीपतो मुंडले, सुयश रॉय, रिंकु मुर्गई, दीपा सिन्हा, मिलन वैष्णव, मनीष सभरवाल, जेरेमी शापिरो, एंड्रयूस बाउर, सौरभ शॉम, पॉल कैशिन, हर्षवर्धन सिंह, श्याम सिंह नेगी, आई एस नेगी, रफीक अहमद, संजय कुमार, आंचल गुप्ता, हरीश आहूजा, वी रंगराजन, रोहित वोहरा, तुलसीप्रिया राजकुमारी, सिद्धार्थ हरि, सत्य पोद्दार, तरंग कपूर, साजिद चिनॉय, नीलकंठ मिश्रा, प्रांजुल भंडारी, पेटिया टोपालोवा, फ्रेडरिको गिल सैंडर्स, कार्तिकेय सुब्रमण्यम, सेहर गुप्ता, साहिल कीनी, आशीष गुप्ता, कुश शाह, श्रीकांत विश्वनाथन, अनिल नायर, हरि मेनन, संध्या वेंकटेश्वरन, मधु .ष्ण, यामिनी आत्मविलास, अकाली मुथु, अखिल शिवदास, सोमनाथ सेन, अंजली चिकरसल, स्वप्निल शेखर, राजीव मल्होत्रा, मनोरंजन पटनायक, रणेन बनर्जी, दिलीप असबे और भागेश व्यास।

इन सबसे अतिरिक्त भी भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और संगठनों ने अपने विषय से संबंधित जानकारियां हमें सुलभ कराई हैं। प्रशासकीय स्तर पर आर्थिक प्रभाग और मुख्य आर्थिक सलाहकार के कार्यालयों के इन सदस्यों ने अपने-अपने कौशल का विशेष रूप से योगदान दिया है : एस. सेल्वकुमार, आ.पी. पुरी, आर.के. सिन्हा, एन श्रीनिवासन, वी के प्रेमकुमारन, गुरुमीत भारद्वाज, प्रदीप राणा, साधना शर्मा, ज्योति बहल, सुशील शर्मा, मनीष पवार, सुषमा, मुना साह, सुरेश कुमार, अनिकेत सिंह, जोध सिंह, पुनीत, ओमबीर, आर आर मीणा, सुभाष चंद, राज कुमार और आर्थिक प्रभाग के सदस्य। इस संस्करण का हिन्दी अनुवाद प्रो. बी.एस. बागला ने किया है, उनके टंकण सहायक श्री संतोष कुमार हैं। समीक्षा के मुख्यपृष्ठ की रचना जॉर्ज डिजाइन, कोची के जैकब जॉर्ज ने विनीत कुमार के सहयोग से की है।

अन्त में, आर्थिक समीक्षा, इसकी रचना से जुड़े सभी सहकर्मियों के परिजनों के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त कर रही है। इन सभी ने हमारे सहभोगियों को बड़े धैर्य और संयम के साथ इस कार्य को संपूर्ति तक पहुँचाने में अथक परिश्रम करने का संबल प्रदान किया है।

अरविन्द सुब्रमण्यम
(मुख्य आर्थिक सलाकार/परामर्शदाता)
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

प्राक्कथन

पिछल वर्ष वित्तमंत्रालय के आर्थिक कार्य प्रभाग ने बहुत खेद के साथ नोट किया कि चापलूसी का नकल करने से भी उच्चतर स्वरूप विद्यमान है। और वह भी विश्व के सर्वाधिक सार्वजनिक मंच, एमेजोन पर, यह स्वरूप है साहित्यिक चोरी! किन्तु हमारे बौद्धिक संपदा अधिकारों के इस हनन पर हुए कष्ट का कहीं न कहीं इस संतोष से परिमार्जन हो गया कि चलो, ऐसे ही सही, हमारी समीक्षा विश्व में कहीं बड़े स्तर पर सुपाठकों तक पहुँच तो गई! इस बार हम अपनी रचना को और बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। साथ ही एक बड़ी जोखिम भी उठा रहे हैं। कहीं इसे लोकप्रिय रचनाशीलता का परिणाम नहीं मान लिया जाए।

इस वर्ष की समीक्षा एक बड़े अंतर्राष्ट्रीय उथल-पुथल के परिप्रेक्ष्य में प्रकाशित हो रही है। ब्रेक्जिट और उन्नत देशों की अर्थव्यवस्थाओं में बदलावों के साथ-साथ देश के आंतरिक आर्थिक पटल पर भी दो बड़े क्रांतिकारी कदम उठाए गए हैं : जीएसटी और विमुद्रीकरण।

स्पष्टत: समीक्षा को इन सभी अल्पकालिक घटनाचक्रों के साथ भी पूरा न्याय करना होगा। अन्यथा यह ''दूल्हे बिना बारात'' बन कर रह जाएगी। विमुद्रीकरण की स्तुति करें या भर्त्सना? ये एक ऐसा कठिन प्रश्न है जिसे सारी दुनिया उठा रही है। समीक्षा इस पर भी चर्चा कर रही है। यह समीक्षा विश्लेषण, परिमाणात्मक जानकारियों और संभावित प्रभावों की दूरूह संरचनाओं के बीच से गुजरते हुए विमुद्रीकरण को ठीक से समझने-समझाने का एक अच्छा अवसर प्रदान कर रही है।

यह एक अभूतपूर्व निर्णय है और स्वभाविक ही है कि इतिहास हमें इसके आंकलन एवं नीर-क्षीर विवेक के लिए कोई दिशा-निर्देश नहीं दे पाएगा। वैसे भी विमुद्रीकरण जैसे संरचनात्मक संक्षोभों के समक्ष आर्थिक प्रतिमान बहुत भंगुर सिद्ध होते हैं। हमारा अपना आंकलन जैसा भी हो, हम उन निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए प्रयुक्त अतिस्मृद्ध एवं जटिल कार्यविधि को पूरी ईमानदारी के साथ अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। हम एक बात निश्चित रूप से कह सकते हैं : इस कदम की कुछ अल्पकालिक लागतें रही हैं, किन्तु इससे दीर्घकालिक लाभ भी संभावित हैं और हम उन पर भी विस्तार से चर्चा करेंगे। उचित नीतिगत प्रयास लागतों को न्यूनतम और संभावित हितलाभों को अधिकतम करने में सहायक हो सकते हैं।

किन्तु ये तात्कालिक घटनाएं महत्वपूर्ण होते हुए भी हमें मध्यकालिक आर्थिक मुद्दों से मुंह मोड़ने की अनुमति नहीं दे पाएंगी। हमें एक प्रकार से विमुद्रीकरण और अत्यधिक ऋणग्रस्त तुलनपत्रों के 'ईर्षालू देवों' तथा भारत के मध्यकालिक आर्थिक भविष्य के बीच एक संतुलन बिठाना होगा। यह वर्तमान समीक्षा (और समीक्षक) के समक्ष एक विशेष चुनौती है।

हमने संरचना की दृष्टि से समीक्षा के तीन विभाग बनाए हैं : परिप्रेक्ष्य, सन्निकट और चिरंतन। पाठक को आकृष्ट करने के लिए एक उपभाग 'भारत : आठ रोचक तथ्य'' भी जोड़ा है। पहले भाग में परिचयात्मक अध्याय में हाल ही के घटनाक्रम और निकट भविष्य की संभावनाओं का एक विहंगम चित्रांकन किया गया है। अगले अध्याय में एक दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करते हुए यह जानने का प्रयास किया गया है कि भारत अपनी आर्थिक जीवन दृष्टि के पटल पर किस मुकाम पर खड़ा है? हमारा तर्क है कि कुछ अतिविशाल स्तरीय चुनौतियों पर पार पाने के लिए हमारे समाज को अपने चिन्तन में भी बड़े परिवर्तन अवश्य करने होंगे। आर्थिक सुधार केवल किन्हीं निहित स्वार्थों का निर्मूलन नहीं हैं, वे तो समस्याओं और उनके समाधानों के प्रति सांझे विमर्श और जीवन दर्शन का रूप धारण करते जा रहे हैं।

भाग 2 चार निकटकालिक प्रश्नों पर केन्द्रित हैं : विमुद्रीकरण, दोहरी तुलनपत्र की निरंतर गहराती हुई समस्या और उनसे निपटने की विधियां, केन्द्र और राज्यों की राजकोषीय नीतियां तथा श्रमसघन रोजगार सृजन। इसी भाग में वर्ष के पूवार्द्ध में विभिन्न क्षेत्रकों के घटनाक्रमों की भी समीक्षा की गई है।

भाग 3 में और मध्यकालिक मुद्दों पर चर्चा की गई है। इस भाग की चर्चा दो मुख्य धाराओं में विभाजित है : राज्य (और नगर), तथा बृहत आंकड़ा आधार। ''सहकारी एवं स्पर्धी संघवाद'' केवल एक सुहाना लगने वाला मंत्र वाक्य नहीं है। यह तो भारत का अपरिहार्य भविष्य है। इसी कारण से देश के प्रांतों एवं उनके संघ के रूप में भारत पर अधिक गहन विचार आवश्यक हो रहा है।

इसी क्रम में हम विभिन्न राज्यों के बीच आय और स्वस्थता के परिणामों की अभिसृति, राज्यों के वित्त और उनके बीच चल रहे वस्तुओं और व्यक्तियों के आवागमन की प्रवृत्तियों पर विचार कर रहे है। यहीं हम उस ''दूसरे भारत'' के निष्पादन की विश्लेषण कला और तत्संबंधी विमर्श पर भी चर्चा करेंगे। यहां एक भारत प्राकृतिक संसाधन संपन्न होते हुए भी दूसरे पर पुन:वितरण रूपी धन अन्तरण के लिए निर्भर दिखाई देता है, जबकि प्राय:द्वीपीय राज्यों की सफल विकास यात्रा में तो ऐसे अंतरणों का शोध और विश्लेषण के लिए भी महत्व समाप्त प्राय: हो चला है। नगरों पर अध्याय स्पष्टत: राज्यों के बीच चल रही गत्यात्मकतापूर्ण स्पर्धा की परिधि में नगरों को भी स्थान प्रदान कर रहा है : भारत को केवल स्पर्धी संधवाद नहीं चाहिए, यहां तो स्पर्धी अनुसंघवाद की भी आवश्यकता हो रही है।

आर्थिक समीक्षा ने पहली बार बृहत आंकड़ा आधारों को अंगिकार किया है। हम देश के भीतर वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाहों पर, इन आकड़ों के माध्यम से एक नई रोशनी डाल रहे हैं। किन्चित गर्वानुभूति के साथ हम यह दावा कर रहे हैं कि यह समीक्षा भारत के राज्यों के बीच वस्तुओं के प्रवाहों का सर्वप्रथम अनुमान प्रस्तुत कर रही है। यह वस्तु एवं सेवा कर प्रणाली द्वारा सुलभ कराए

गए लेनदेन (बीजक) स्तरीय आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित अनुमान है। हम यह भी दावा कर रहे हैं कि समीक्षा देश में प्रवसन प्रवाहों पर नवीन एवं उत्साहवर्धन जानकारी प्रस्तुत कर रही है। यह रेल मंत्रालय के यात्रियों के उद्गम एवं गन्तव्य स्थानों की जानकारी पर आधारित है। जनगणना से प्राप्य जानकारी के विश्लेषण के विषय में भी एक नई कार्यविधि का प्रयोग किया जा रहा है।

एक शानदार तथ्य उभर कर आया है : भारत का आंतरिक एकीकरण सशक्त है। यह तथाकथित परंपरागत ज्ञानवानों के चिन्तन से तो बहुत ही सशक्त है। उदाहरण के लिए हम जान पा रहे हैं कि 8 से 9 मिलियन भारतीय रोजी रोटी कमाने के लिए अन्य प्रदेशों/स्थानों की ओर प्रतिवर्ष प्रस्थान कर जाते है। यह प्रवाह अन्य परंपरागत विद्वानों के अनुमानों से तो लगभग दुगुना है। साथ ही भारत का आंतरिक व्यापार प्रवाह भी अन्य बड़े देशों जितना ही व्यापक एवं विशाल है।

किन्तु ये परिणाम एक बहुत बड़े विरोधाभास की ओर भी इंगित कर रहे हैं। भारत के भीतर तो वस्तुओं, व्यक्तियों और पूंजी के प्रवाह निर्बन्ध रूप से चलते दिखाई पड़ रहे हैं। फिर भी आय एवं स्वस्थता उपलब्धियों में विभिन्न राज्यों/क्षेत्रों के बीच अभिसृति के स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं मिल पा रहे? अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के आरपार तो अभिसृति के प्रमाण बहुत सशक्त प्रतीत होते हैं- गरीब, अपेक्षाकृत कम धनी देश (तेजी से) आगे बढ़कर कम गरीब और अधिक स्वस्थ देशों के अधिक निकट होते जा रहे हैं। भारतीय विरोधाभास इस कारण अधिक विचलित कर रहा है कि कहीं अधिक प्रबल अंतर्राष्ट्रीय सीमा बाधाओं के आरपार तो उत्पादक संसाधनों के आवागमन का क्रम अपेक्षाकृत आसानी से चल रहा है और अभिसृति का कारण बन रहा है तो फिर भारत की अन्तर्प्रान्तीय सीमा रेखाएं छिद्रशील और नम्य होते हुए भी विभिन्न क्षेत्रों के बीच विषमताओं को क्यों बनाए हुए हैं?

समीक्षा अभी चल रहे प्रमुख कार्यक्रमों की लक्षिता की प्रभावोत्पादकता के नए अनुमान प्रस्तुत कर रही है। यह विभिन्न जनपदों में बसी गरीब जनसंख्या और उन जनपदों को मिल रही राशियों के बीच एक बड़ी खाई की ओर इंगित कर रहे हैं। इससे स्वाभाविक रूप से सार्वलौकिक आधारिक आय के उस नूतन विचार की ओर देखने की प्रेरणा मिलती है जो विकसित देशों सहित भारत में भी आजकल चर्चा का एक मुख्य विषय बन चुका है। हम इस विचार को ''महात्मा गांधी के स्वयं के साथ एक संवाद'' के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारा निष्कर्ष यही है कि यह एक ऐसा विचार है जिसका समय आ गया है।

पिछले वर्ष की समीक्षा में कहा गया था कि भारत के लिए और भारत को और बेहतर बनाने के विचारों का महत्व है। यह बात गौण है कि वह विचार किसने दिया था और कहां सिद्ध किया था। यह विचार आज और भी अधिक अहम हो गया है। हमने इस बार देश विदेश से, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र से, शैक्षिक विशेषज्ञों में से, और सभ्य समाज से कहीं अधिक लेखकों विचारकों के चिन्तन को अपनी चर्चाओं का आधार बनाया है। यह भी एक गौरव का विषय है कि इस वर्ष की समीक्षा में माननीय वित्तमंत्री ने स्वयं अपनी लेखनी से एक योगदान दिया है। और इस बार हमें यह आशंका भी नहीं है कि समीक्षा का मूल्यांकन कहीं उसके मुखपृष्ठ से ही नहीं हो जाए, अब उसे भी एक रचनात्मक स्वरूप मिल गया है।

इस वर्ष की समीक्षा की केवल एक खंड में प्रस्तुति भी एक नवीनता है। सहयोगी खंड में प्राय: प्रस्तुत होता रहा गत वर्ष की गतिविधियों का विस्तृत सिंहावलोकन अब एक अलग प्रकाशन के रूप में आएगा।

पिछले कुछ समय से आर्थिक समीक्षा की भूमिका और इसकी विषय वस्तुअ को लेकर काफी विचार मंथन चला है। समीक्षा को क्या करने की आकांक्षा लेकर चलना चाहिए? यहां उत्तर बहुत स्पष्ट है, वस्तुत: वर्षों पहले पिछली शती के महानतम अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड केंज ही वह उत्तर दे गए थे। उन्होंने स्वामी-अर्थशास्त्री संबंध के जो आवश्यक तत्व बताए थे, वही स्वामी-समीक्षा संबंध के लिए भी मान्य हैं।

तोकेंज के ही शब्दों में, 'इसमें विभिन्न विलक्षणताओं का एक अनूठा संयोग होना चाहिए, इसे गणित, इतिहास, राजनीति और किसी सीमा तक दर्शनशास्त्र से भी कुछ न कुछ ग्रहण करना चाहिए। इसे चिन्हों-संकेतों को समझना, किन्तु शब्दों में अभिव्यक्ति करना आना चाहिए। इसे सामान्य की दृष्टि से ही विशिष्ट का चिन्तन करना चाहिए और अर्मूत एवं स्थूल का एक ही विचार प्रवाह में स्पर्श करते हुए चलना चाहिए। इसे अतीत के आलोक में भविष्य के लिए वर्तमान का अध्ययन करना चाहिए। मनुष्य की प्रकृति और उसकी संस्था व्यवस्था का कोई भाग इसकी परिधी से पूरी तरह मुक्त नहीं रहना चाहिए। यह एक साथ ही सौद्देश्य और निर्लिप्त भावों का संगम होना चाहिए। इसके लेखक एक कलाकार की भांति अनुत्कोच्य और निष्पृह होने चाहिए किन्तु उन्हें कभी-कभी उतना ही वास्तविकता के धरातल के निकट भी होना चाहिए जितना राजनीतिज्ञ होते हैं'।

पिछले तीन वर्षों में समीक्षा संभवत: उन उच्च मानकों का अनुपालन तो सदैव नहीं कर पायी है, फिर भी, वे मान्य हैं और वर्तमान एवं भावी समीक्षा संस्करणों के लिए मान्य होने भी चाहिए।

अरविंद सुब्रमण्यम
(मुख्य आर्थिक सलाहकार)
वित्त मंत्रालय
भारत सरकार

शब्द संक्षेप कोष

AMD	अहमदाबाद	Ahmedabad
AMRUT	अटल शहरी पुन:र्जीवन एवं पुन:निर्माण	Atal Mission for Rejuvenation and Urban Transformation
ARV	वार्षिक किराया मूल्य	Annual Rateable Value
ASICS	भारत की नगर प्रणालियों का वार्षिक सर्वेक्षण	Annual Survey of India's City-Systems
BBMP	ब्रुहाट बैंगलोर महानगरपालिका	Bruhat Bangalore Mahanagara Palike
BBR	भुवनेश्वर	Bhubaneswar
BLR	बैंगलुरू	Bengaluru
BPL	भोपाल	Bhopal
CDR	चंडीगढ़	Chandigarh
CFPI	उपभोक्ता खाद्य कीमत सूचकांक	Consumer Food Price Index
CHN	चेन्नई	Chennai
CMM	प्रसमूह आधारित प्रवसन मापक	Cohort-based Migration Metric
CPI	उपभोक्ता कीमत सूचकांक	Consumer Price Index
CPI- IW	उपभोक्ता कीमत सूचकांक-औद्योगिक कर्मियों के लिए	Consumer Price Index for Industrial Workers
CPI-AL	उपभोक्ता कीमत सूचकांक-कृषि श्रमिकों के लिए	Consumer Price Index for Agricultural Labour
CRIS	रेल सूचना व्यवस्था केन्द्र	Centre for Railway Information System
CSO	केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन	Central Statistics Office
CSS	केन्द्र प्रायोजित योजना/प्रकल्प	Centrally Sponsored Schemes
DCRF	ऋण समेकन एवं पुन: रचना सुविधा	Debt Consolidation and Reconstruction Facility
DDN	देहरादून	Dehradun
DEM	डिजिटल उच्चता प्रतिमान	Digital Elevation Model
DIPP	औद्योगोगि नीति एवं प्रोत्साहन विभाग	Department of Industrial Policy & Promotion
DL	दिल्ली	Delhi
ETM	संवर्धित विषयमान चित्रक	Enhanced Thematic Mapper
FAR	तल क्षेत्रफल अनुपात	Floor Area Ratio
FFC	चौदहवां वित्त आयोग	Fourteenth Finance Commission
FRBM	राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम	Fiscal Responsibility and Budget Management Act
FRL	राजकोषीय उत्तरदायित्व विधेयन	Fiscal Responsibility Legislation
FSI	तल भूक्षेत्र सूचक	Floor Space Index
GBM	प्रवणतावर्धी प्रतिमान	Gradient Boosting Model
GDP	सकल घरेलू (आंतरिक) उत्पाद	Gross Domestic Product
GIS	भौगोलिक सूचना प्रणाली	Geographical Information System
GSDP	सकल राज्य घरेलू उत्पाद	Gross State Domestic Product
HPEC	उच्च शक्ति विशेषज्ञ समिति	High Powered Expert Committee
HRIDAY	हृदय : धरोहर नगर विकास एवं संवर्धन योजना	Heritage City Development and Augmentation Yojana
HUDA	हुडा : हरियाणा शहरी विकास अधिकरण	Haryana Urban Development Authority
HYD	हैदराबाद	Hyderabad
IL&FS	इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेनिश्यल सर्विसिज लिमिटेड	Infrastructure Leasing & Financial Services Limited
IMF	अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष	International Monetary Fund
IMR	शिशु मृत्युदर (मरणशीलता)	Infant Mortality Rate
ISRO	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन	Indian Space Research Organization
ITB	मध्यवर्ती राजकोषीय हुन्डियां	Intermediate Treasury Bill
JNNURM	जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय शहरी पुन: नवीकरण मिशन	Jawaharlal Nehru National Urban Renewal Mission
JPR	जयपुर	Jaipur
JUSCO	जमशेदपुर सुविधाएं एवं सेवाएं कंपनी लिमिटेड	Jamshedpur Utilities and Services Company Ltd.
KOL	कोलकाता	Kolkata
KPR	कानपुर	Kanpur
LANDSAT	दूर संवेदी भू-उपग्रह प्रणाली	Land Remote-Sensing Satellite (System)
LE Life	जीवांश	Expectancy
LKO	लखनऊ	Lucknow
LUD	लुधियाना	Ludhiana
MCG	गुरूग्राम नगर निगम	Municipal Corporation of Gurgaon
MDG	सहस्राब्दि विकास लक्ष्य	Millennium Development Goals
MIC	मध्यम आय देश	Middle Income Countries

MNDWI	परिवर्तित मानकीकृत अन्तर जल सूचक	Modified Normalized Difference Water Index
MODIS	सामान्य विभेदन दृश्यांकन दूरवर्णक्रममापी	Moderate Resolution Imaging Spectroradiometer
MoUD	शहरी विकास मंत्रालय	Ministry of Urban Development
MPCE	मासिक प्रतिव्यक्ति व्यय	Monthly Per Capita Expenditure
MUM	मुम्बई	Mumbai
NASA	राष्ट्रीय विमानन एवं अंतरिक्ष प्रशासन	National Aeronautics and Space Administration
NDBI	मानकीकृत अंतर निर्मित सूचक	Normalized Difference Built-up Index
NITI	भारत परिवर्तन हेतु राष्ट्रीय संस्थान	National Institution for Transforming India
NRSA	राष्ट्रीय दूर संवेदन एजेंसी	National Remote Sensing Agency
NSS	राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण	National Sample Survey
O&M	संचालन एवं रखरखाव	Operation and Maintenance
OLI	व्यवहारिक भू दृश्यांक	Operational Land Imager
PAT	पटना	Patna
PCA	प्रमुख घटक विश्लेषण	Principal Component Analysis
PDL	जन उद्घाटन अधिनियम	Public Disclosure Laws
PPP	क्रय शक्ति तुल्यता	Purchasing Power Parity
PSU	सार्वजनिक क्षेत्रीय उपक्रम/इकाई	Public Sector Unit
PUN	पुणे	Pune
PWD	लोक निर्माण विभाग	Public Works Department
RAI	रायपुर	Raipur
RAN	रांची	Ranchi
RMB	रेनमिनबी	Renminbi
SAVI	मृदा संमजित वनस्पति सूचक	Soil Adjusted Vegetation Index
SBM	स्वच्छ भारत मिशन	Swachh Bharat Mission
SCM	स्मार्ट सिटी मिशन	Smart Cities Mission
SDL	राज्य विकास ऋण	State Development Loan
SRS	प्रतिदर्श पंजीकरण सर्वेक्षण	Sample Registration Survey
SUR	सूरत	Surat
TFC	तेरहवां वित्त आयोग	Thirteenth Finance Commission
TFR	सकल गर्भाधान दर	Total Fertility Rate
TVM	तिरूवंतनमपुरम्	Thiruvananthapuram
UA	शहरी बस्ती	Urban Agglomeration
UAV	इकाई क्षेत्रिक मूल्य	Unit Area Value
UDAY	उज्जवल डिस्कॉम आश्वस्ति योजना	Ujwal DISCOM Assurance Yojana
ULBs	शहरी स्थानीय निकाय	Urban Local Bodies
UN	संयुक्त राष्ट्र	United Nations
UNICEF	संयुक्त राष्ट्र बालकोष	United Nations Children's Fund
USGS	संयुक्त राज्य भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण	United States Geological Survey
UTS	अनारक्षित टिकट प्रणाली	Unreserved Ticketing System
VAT	मूल्य वृद्धि कर	Value Added Tax
WAH	भारित औसत मिश्रित	Weighted Average Hybrid
WDI	विश्व विकास सूचक	World Development Indicators
WEO	विश्व आर्थिक संभाव्यता	World Economic Outlook
WHO	विश्व स्वास्थ्य संगठन	World Health Organization
WPI	थोक कीमत सूचक	Wholesale Price Index